Volume : 4 | Issue : 9 | Sept 2015 ISSN - 2250-1991

Research Paper Economics

घरेलू एवं पशुपालन कार्यों में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी (Participation)
Gharelu Avam Pashupalan Karyo me Gramin Mahilao Ki Bhagidari

Dr Sunita Beniwal

KEYWORDS

I- परिचयात्मक

एक राष्ट्र की वृद्वि एवं समृद्वि उसकी महिलाओं की सामाजिक स्थिति एवं विकास पर भी निर्भर करती है। ग्रामीण क्षेत्रों मे जहाँ पुरुष खेती–बाड़ी के बाहरी कामों में लगे हुए हैं, वहीं महिलाऐं गृहकार्य के साथ–साथ पशुपालन एवं कृषि कार्य भी करती हैं। कृषि, घरेलू एवं पशुपालन गतिविधियों में घन्टों कार्य करने के बाद भी इनके कार्य को उत्पादक नहीं मानकर इनकी जिम्मेदारी माना जाता है। तथा सकल राष्ट्रीय उत्पाद में इनकी गणना नहीं की जाती। महिलाऐं देश के आर्थिक विकास में अमूल्य योगदान दे रही हैं मगर दुःखद स्थिति यह है कि आज भी महिलाऐं उपेक्षित हैं। अतः ग्रामीण क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले इस महत्वपूर्ण लेकिन उपेक्षित वर्ग (म. हलाऐं) के योगदान की गहराई से अध्ययन की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

II साहित्य पुनरावलोकनः

Andan and Jslam (1981) बांग्लादेश में महिलाऐं अपने उत्पादक समय को घर के कार्यों, बच्चों की देखभाल एवं निम्न स्तर के कार्यों जैसे–पानी भरने में व्यतीत कर देती हैं। Ahuja et al (1984), लुधियाना जिले के दो गांवों का अध्ययन करके बताया कि ग्रामीण महिलायें औसत रूप से भोजन की तैयारी, पशुओं की देखभाल, सफाई सम्बन्धी कार्यों, कृषि कार्यों एवं बच्चों की देखभाल में अधिक समय देती हैं। मध्यम आकार के परिवारों में महिलाऐं कृषि, घर की सुरक्षा, भोजन पकाने में न्यूनतम समय लगती हैं। जबकि बड़े आकार के खेतों की देखभाल, भोजन तैयार एवं अन्य कार्यों में अधिक समय देती हैं। ळनचजं ंदक ैपदही ;1986द्धए हरियाणा राज्य में महिला घरेलू एवं पशुओं की देखभाल सम्बन्धी कार्यों में प्रतिदिन औसत रूप से 11 घण्टे देती हैं। जबकि पुरुष इन गतिविधियों में 5 घण्टे से भी कम समय व्यतीत करते हैं। ड्ढौलंच ;1988द्ध, हरियाणा राज्य में बिना कृषि मौसम के सीमान्त आकार के खेतों की महिलाऐं घरेलू कार्यों में औसत रूप से 7 घण्टे 35 मिनिट सार्थक रूप से जब कि बड़े आकार के जोतों वाली महिलाऐं 9 घण्टे 38 मिनिट व्यतीत करती हैं। ैगमदं ंदक ठींजदंहंत ;1985द्धए राजस्थान में कृषि के तेजीकाल के समय जनजातीय महिलाऐं प्रतिदिन 14.66 घन्टे व्यतीत करती हैं, जिनमें से 6.42 घन्टे घर के कार्यों में लगाती हैं। दूसरी तरफ गैर जनजातीय महिलाऐं प्रतिदिन 15.75 घन्टों में से 7.61 घन्टे घरेलू कार्यों को देती हैं।

Stephens (1990), पाकिस्तान में महिलाऐं 6.5 घन्टे प्रतिदिन पशुओं की देखभाल एवं कृषि उत्पादों की प्रोसेसिंग में देती हैं। Shams (1993), ईरान के मरकाजी प्रान्त के अध्ययन से बताया कि ग्रामीण महिलाऐं सक्रिय रूप से दूध सम्बन्धी कार्यों (100:), पशुओं की देखभाल (50:), पशुओं को चराने (10:) एवं फसल उत्पादन (15:) में भागीदारी निभाती हैं। क्मल (1981), उत्तरप्रदेश के अलाहबाद जिले में पुरुष चारा उत्पादन, स्वास्थ्य एवं बीमारी नियन्त्रण एवं विपणन कार्यों से सम्बन्धित होते हैं। म. हलाऐं घर पर अधिकतर पशुओं के चारे एवं चारे की व्यवस्था सम्बन्धी कार्यों पर के. न्द्रित रहती हैं। ठींजप ंदक ैपदही (1985), हिमाचल प्रदेश में महिलाऐं अपने समय का 2/3 भाग पशुओं की रक्षा मे देती हैं। सीमान्त खेतों की महिलाओं का कुल कार्य में 71: एवं मध्यम खेतों में 66: योगदान है। ळनचजं ंदक ैपदही ;1986द्धए हरियाण ाा राज्य में महिला घरेलू कार्यों एवं पशुओं की देखभाल में प्रतिदिन औसत रूप से 11 घण्टे, जब कि पुरुष इन गतिविधियों में 5 घण्टे से भी कम समय देते हैं। ैपदही मज ंस ;1987द्ध, हरियाणा राज्य में भूमिहीन, सीमान्त, छोटे, मध्यम एवं बड़े कृषकों से सम्बन्धित सभी ग्रामीण गृहणियाँ अपना अधिकतर समय भोजन तैयार करने, पशुओं की देखभाल एवं आराम के समय की गतिविधियों में देती हैं। पशुओं की देखभाल में भूमिहीन एवं मध्यम श्रेणी की महिलाऐं सीमान्त, छोटे एवं बड़े किसानों की महिलाओं की अपेक्षा अधिक समय देती हैं।

Jain (1991)] हरियाणा राज्य के हिसार और कुरुक्षेत्र जिलों में पशुपालन गति. विधियों में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं का योगदान (औसत मानव दिनों के रूप में) अधिक पाया गया। Asha Singhal and Seema Tyagi (2000)] उदयपुर जिले की गिर्वा पंचायत समिति के चयनित दो गांवों के अध्ययन में पाया कि पशुओं को आहार देने, प्रसव कराने, बछड़े की देखभाल, पशुओं की सुरक्षा का प्रबन्ध, दूध निकालने एवं पशुओं को विभिन्न बीमारियों से बचाने सम्बन्धी देखभाल का दायित्व महिलाओं पर होता हैं।

III अध्ययन पद्वति

वर्तमान अध्ययन राजस्थान राज्य के टोंक जिले की निवाई तहसील तक सीमित है। इसके लिए स्तरीकृत निदर्शन विधि ";जतंजपपिमक "उचसपदह डमजीवकद्ध को अप. नाया गया। अध्ययन प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित है। प्राथमिक आँकड़ों के संकलन के लिए अनुसूची प्रविधि का प्रयोग किया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए घरेलू एवं पशुपालन कार्यों में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी (च्तजपबपचंजपवद)–कार्य के घन्टों के रूप में, के लिए ANCOVA MODEL (Analysis of Co-Varince) प्रयुक्त किया है। क्योंकि आश्रित चर मात्रात्मक प्रकृति का है। ।दबवअं डवकमस से प्राप्त परिणामों की सार्थकता जाँच का विभिन्न सार्थकता–स्तरों (1%, 5%, 10%) पर परीक्षण किया है।

IV परिणाम एवं विश्लेषण

(v) घरेलू कार्यों में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी

विभिन्न गतिविधियों में महिलाओं की भागदारी को प्रतिदिन व्यतीत औसत घन्टों सम्बन्धी तथ्यों को तालिका–1 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका–1: घरेलू कार्यों में ग्रामीण महिलाओं एवं पुरुषों द्वारा प्रतिदिन व्यतीत आ. ैसत घन्टे

गतिविधियाँ	प्रतिदिन व्यतीत औसत घन्टे	
	महिला (N=150)	पुरुष (N=50)
1. पानी व ईंधन लाना	.94 (135)	.65 (5)
2. भोजन पकाना	1.89 (147)	1 (3)
3. रसोई व बर्तनों की सफाई	.96 (148)	.5 (2)
4. कपड़े एवं घर की सफाई	1.06 (150)	.46 (7)
5. बच्चों एवं अन्य सदस्यों की देखभाल	1.49 (142)	.65 (17)

नोटः– कोष्ठक में दिए गये आँकड़े उत्तरदाताओं की संख्या को व्यक्त कर रहे हैं।

घरेलू कार्यों में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी सम्बन्धों आँकड़ों का आँकलन एवं विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि सभी गतिविधियों में पुरुषों की तुलना में म. हला उत्तरदाताओं की अधिक प्रतिशत संख्या भागीदारी निभाती है। साथ ही विभिन्न क्रियाओं में महिलाओं द्वारा ही अधिक घन्टे कार्य किया जाता है।

महिलाओं की सर्वाधिक औसत भागीदारी भोजन पकाने (1.89 घन्टे) में है। दूसरे स्थान पर बच्चों एवं अन्य सदस्यों की देखभाल (1.49 घन्टे) कार्यों में महिलाऐं योगद. ान देती हैं। जबकि पानी व ईंधन लाने सम्बन्धी कार्यों (.94 घण्टे) में महिलाओं की न्यूनतम भागीदारी है। पुरुषों की भोजन पकाने (1 घण्टे) गतिविधि में औसत भागीदारी सर्वाधिक है।

घरेलू कार्यों मे ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी एवं प्रभावित करने वाले कारक

घरेलू कार्यों में महिलाओं द्वारा व्यतीत समय को अनेक कारक प्रभावित करते हैं।

तालिका 2: घरेलू कार्यों में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी एवं इसे प्रभावित करने वाले कारक (Ancova Model)

चर	गुणांक	विभ्रम	T का परिगणित मान	P मूल्य
अन्तः खण्ड	7.9597	0.9403	8.4646	0.00001
आयु	−0.0430	0.0212	−2.0207	0.0451
परिवार का आकार	0.0426	0.0415	1.0263	0.3065
कुल पारिवारिक आय	2.1789	4.1981	0.5190	0.6045
भू–जोतों का आकार	−0.0040	0.0078	−0.5122	0.6093
पशुओं की संख्या	−0.0783	0.0471	−1.6617	0.0987
जाति	−0.3639	0.4251	−0.8562	0.3933
परिवार की बनावट	−0.8765	0.4881	−1.7957	0.0746
शैक्षणिक योग्यता	0.9046	0.6685	1.3531	0.1781
	R^2=0.951 F Statistic (8,141)=2.3167 (P मूल्य = 0.0229)			

* Significant at 0.05 Level of Probability.

** Significant at 0.10 Level of Probability.

घरेलू कार्यों में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी एवं आयु, पशुओं की संख्या, परिवार की बनावट (संयुक्त परिवार, क्त्र1) चरों के मध्य ऋणात्मक एवं सार्थक सम्बन्ध पाया गया। अर्थात् कम आयु, पशुओं की कम संख्या एवं एकल परिवारों की महिलाऐं घरेलू कार्यों में अधिक योगदान देती हैं। जबकि अन्य स्वतन्त्र चरों के साथ सम्बन्ध सार्थक नहीं पाया गया। सभी स्वतन्त्र चरों के घरेलू गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी के साथ संयुक्त प्रभाव से ज्ञात होता है कि यह सम्बन्ध 5: सार्थकता–स्तर पर सांि.ख्यकीय रूप से सार्थक सिद्ध हुआ। चूँकि थ्ैजंजपेजपबत्र2ण्3167 है। जिसका च मूल्य त्र 0.0229 है। जो कि काफी कम है।

(c) पशुपालन कार्यों में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी

विभिन्न गतिविधियों में महिलाओं द्वारा प्रतिदिन व्यतीत औसत घन्टों का विवरण तालि.का–3 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका–3: पशुपालन कार्यों में ग्रामीण महिलाओं एवं पुरुषों द्वारा प्रतिदिन व्यतीत औसत घन्टे
N=200

गतिविधियाँ	प्रतिदिन व्यतीत औसत घन्टे	
	महिला (N=150)	पुरुष (N=50)
1. चारे सम्बन्धी कार्य	1.62 (142)	1.21 (34)
2. पशुओं को नहलाना तथा पशुशाला की सफाई	.95 (127)	1.02 (26)
3. दूध सम्बन्धी कार्य	1.12 (117)	1.02 (28)
4. गोबर व खाद सम्बन्धित कार्य	.84 (137)	.47 (13)

नोटः– कोष्ठक में दिये गये आँकड़े उत्तरदाताओं की संख्या को व्यक्त कर रहे हैं।

महिलाओं एवं पुरूषों के पशुपालन कार्यों में योगदान सम्बन्धी आँकड़ों से स्पष्ट है कि पशुपालन कार्यों से सम्बन्धित सभी गतिविधियों में पुरूषों की तुलना में महिला उत्त.रदाताओं की अधिक प्रतिशत संख्या भागीदारी निभाती हैं। व्यतीत समय की दृष्टि से केवल पशुओं को नहलाना एवं पशुशाला की सफाई कार्यों में पुरूष अधिक समय तक कार्य करते हैं। शेष अन्य गतिविधियों में महिलाओं द्वारा ही अधिक घन्टे तक कार्य किया जाता है। महिलाओं एवं पुरूषों दोनों की सर्वाधिक औसत भागीदारी पशुओं के लिए चारा लाने एवं पशुओं के चराने से सम्बन्धित कार्यों (महिलाऐं प्रतिदिन 1.62 घन्टे व पुरूष 1.21 घन्टे) में है। दूसरे स्थान पर महिलाऐं दूध व दूध से सम्बन्धित कार्यों में प्रतिदिन 1.12 घन्टे कार्य करती हैं। जबकि गोबर व खाद सम्बन्धित कार्यों मे मि.हलाओं (.84 घन्टे) एवं पुरूषों (.47 घन्टे) दोनों का न्यूनतम योगदान है।

पशुपालन कार्यों में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी व प्रभावित करने वाले कारक

पशुपालन गतिविधियों में ग्रामीण महिलाओं द्वारा व्यतीत समय को अनेक चर प्रभावित करते हैं। इस सम्बन्ध के मात्रात्मक माप हेतु प्रयुक्त ।दबवअं डवकमस से प्राप्त परिणाम तालिका–4 में बताये गए हैं।

तालिका–4: पशुपालन कार्यों में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी तथा इसे प्रभावित करने वाले कारक (Ancova Model)

चर	प्रतीपगमन गुणांक	प्रमाप विभ्रम	T का परिगणित मान	P मूल्य
अन्तःखण्ड	5.7101*	0.8039	7.1029	0.00001
आयु	−0.0314	0.0193	−1.6268	0.1060
परिवार का आकार	−0.0402	0.0465	−0.8636	0.3892
कुल पारिवारिक आय	−1.3761	4.1073	−0.3350	0.7380
भू–जोतों का आकार	−0.0094	0.0084	−1.1068	0.2702
पशुओं की संख्या	0.0488	0.0437	1.1159	0.2663
जाति	−0.3239	0.4308	−0.7518	0.4534
परिवार की बनावट	−0.7488	0.4882	−1.5336	0.1273
शैक्षणिक योग्यता	0.3968	0.6095	0.6510	0.5161
	R2= 0.1006 F Statistic (8, 141)= 1.9850 (P मूल्य = 0.0524)			

* Significatnt at 0.05 Level of Probability

विभिन्न स्वतन्त्र चरों के साथ पशुपालन कार्यों में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी का सम्बन्ध सार्थक सिद्ध नहीं हुआ।

सभी स्वतन्त्र चरों का पशुपालन कार्यों में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी पर सम्मिलित प्रभाव 10: सार्थकता–स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक सिद्ध पाया गया। जहाँ थ्ैजंजपेजपबे त्र 1.9850 है। जिसका च मूल्य त्र 0.0524 प्राप्त हुआ है जो कि काफी कम है।

निष्कर्ष

घरेलू एवं पशुपालन कार्यों से सम्बन्धित लगभग सभी कार्यों में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की अधिक प्रतिशत संख्या भागीदारी निभाती है। साथ ही इन क्रियाओं में व्यतीत समय की दृष्टि से भी पुरूषों की अपेक्षा महिला उत्तरदाताओं द्वारा ही अधिक घन्टे कार्य किया जाता है। घरेलू कार्यों में महिलाओं द्वारा सर्वाधिक औसत भागीदारी भोजन पकाने एवं पशुपालन कार्यों में पशुओं के लिए चारा लाने एवं उन्हें चराने से सम्बन्धित कार्यों में पायी गयी।

गुणात्मक चरों को देखा जाए जो केवल परिवार की बनावट चर का ही घरेलू कार्यों में महिलाओं की भागीदारी के साथ सम्बन्ध सार्थक पाया गया जब कि मात्रात्मक चरों में आयु एवं पशुओं की संख्या स्वतन्त्र चरों के साथ यह सम्बन्ध सार्थक सिद्ध हुआ। लेकिन पशुपालन कार्यों में महिलाओं की भागीदारी के साथ किसी भी स्वतन्त्र चर का सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया। किन्तु सभी स्वतन्त्र चरों का संयुक्त प्रभाव घरेलू एवं पशुपालन कार्यों में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी के साथ सार्थक सिद्ध हुआ।

भावी शोध कार्य की सम्भवानाऐं

इसी तरह का अध्ययन अन्य राज्यों एवं राजस्थान राज्य के अन्य जिलों में किया जा सकता है। जहाँ महिलाऐं कृषि एवं अन्य क्रियाओं में कार्यरत हैं। ताकि महिलाओं के विकास के लिए अधिक प्रभावपूर्ण निष्कर्ष एवं सुझाव मिल सकें। और विभिन्न जिलों के अन्तर्गत प्राप्त निष्कर्षों को समेकित करके कुछ ठोस परिणामों तक पहुँचा जा सकता है जो इस सम्बन्ध में नीति निर्धारण प्रक्रिया को उचित दिशा एवं मार्गदर्शन दे सकते हैं।

REFERENCES

Boserup, E. (1970), Women role in Economic Development, New York, St. Martins Press. | Kaur, Satnam (1987), Women in Rural Development: A case Study, Mittal Publications, Delhi. | Punia, R.K. (1991), Women in Agriculture, Vol.1: their Status and Role, Northern Book Centre, New Delhi. | Rani, Dr. Aashu (1997), Mahilla Vikas KariyaKaram, Inna Shree Publishers, Jaipur | Rath, Navaneet (1996), Women in Rural Society: A Quest for Development, MD publications Pvt. Ltd., New Delhi. | Sethi, Raj. Mohini (1991), Women in Agriculture, Rawat Publications, Jaipur. | Verma, Shashi Kanta (1992), Women in Agriculture: A Socio-Economic Analysis, Concept Publishing Company, New Delhi. | Gujarati, Damodar N. (2007), Basic Econometrics (Second edition), Mc-Graw Hill Book Company, New York. | Agarwal, Kamlesh (1989), "Gramin Arthvyastha Mein Mahillaaon Ki Bhagidari", Kurukshitra, September. | Bhatt, K.P. (1975), "A Leading Role in Agriculture and Animal Husbandry", Indian Farming, 25 (8): 30-40. | Dubey, et al (1982), "Role of Rural Women in Decision-Making With Respect to Animal Husbandry", Indian Journal of Home Science, 14 (2), P. 18-20. | Duvvury, Nata (1989), "Women in Agriculture: A Review of the Indian Literature", Economic & Political Weekly, Oct. 28, Ws-96. Gerala. | Dr. Ramanand and Gerola, Dr. Kusum (1994), "Uttrakhand Ke Saamagik Aarthik Jeevan Me Mahillaaon Ka Yogadaan, Yojana, May, pp. 17-19. | Hirway, Indira and Roy, Anil Kumar (1999), "Women in Rural Economy: The case of India" Indian Journal of Agricultural Economics, Vol., 54, No. 3, July-Sept. | Montios, V.H. (1989), "Women in Agriculture," Indian Farming, Vol.25 (3): 6. | Munjal, Shashi, Punia, R.K. and Sangwan, Veena (1985), "Women's Economic Contribution in Farm Households in Haryana", Indian Journal of Agricultural Economics, 40 (3) 274. | Multhuraja, C. (1990), "Rural Women in Indian Agriculture" Khadigramodyog, May 36 (8)", P-339. | Pareira, Olinda (1986), "She carries too many Burdens", Social Welfare, May 33 (2), P-14. | Sekar, C. (2003), "A Micro Level Investigation on participation of Womanfolk in Agricultural and Household Activities in Western Tamilnadu", Economic Affairs, Vol. 48, Qr.-2, June. | Sing, Seema (1985), "Involvement of Rural Women in Farming", Indian J. of Ext. Edu., Vol.21 (384): 110-111. | Srivastava, Sasmeeta (1988), "Women of Rural India-An Overview,", Yojana, May 16-13, 32 (9), P.-4.